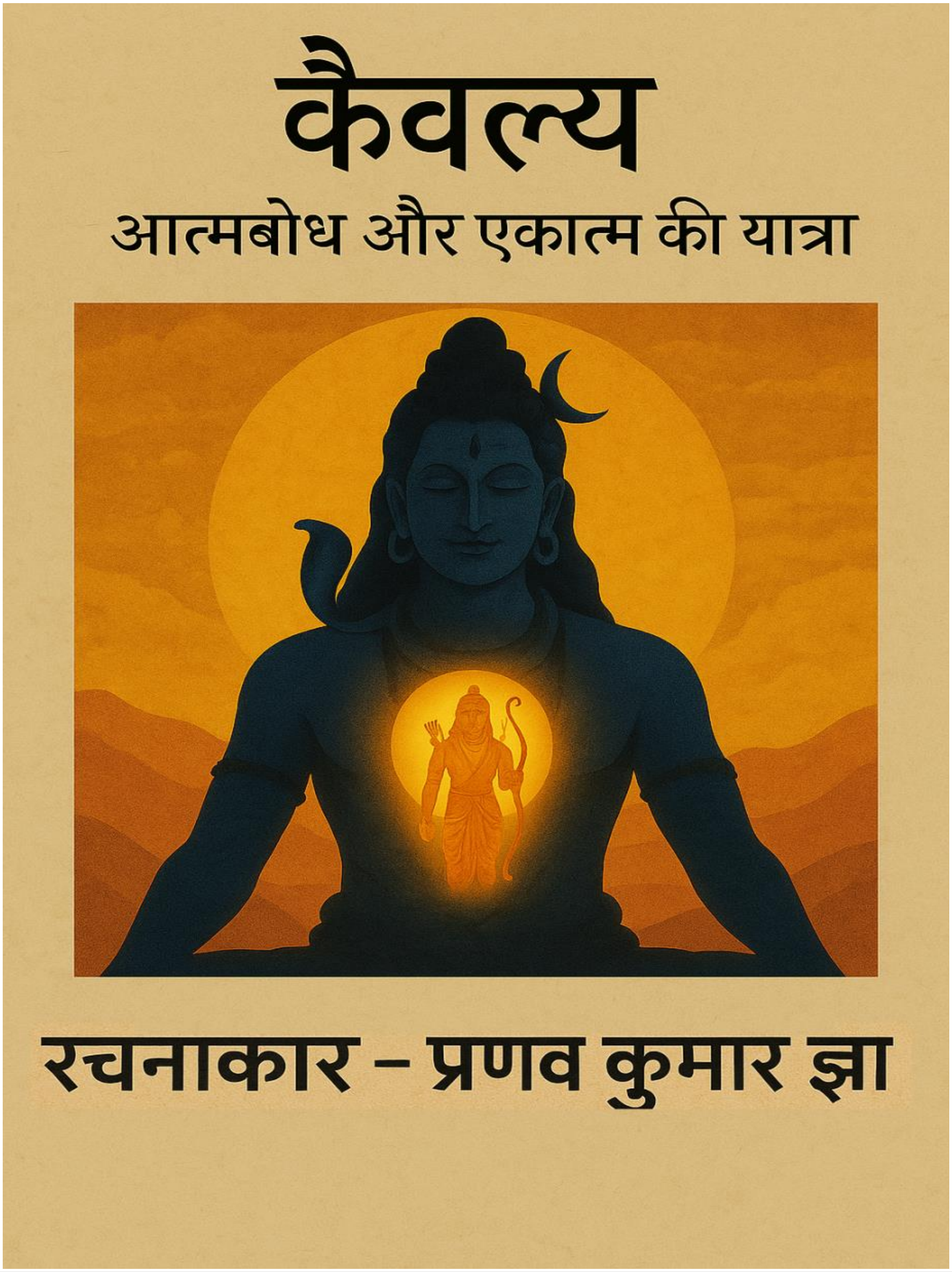
कैवल्य
आत्मबोध और एकात्म की यात्रा
रचनाकार – प्रणव कुमार झा

खंड 1: आदि चैतन्य और प्रथम स्पंदन

1.1: निर्विकार का उदय

जब कुछ भी नहीं था,
न स्थान, न समय,
न रूप, न नाम,

था वह चैतन्य निर्विकार,
निराकार और अनादि था।

1.2: सृष्टि की चाह और साकार रूप का प्राकट्य

उस चैतन्य के भीतर
जगी थी एक चाह —
सृष्टि को प्रकट करने की।

उस परम चैतन्य की चाह से
एक दिव्य साकार रूप प्रकट हुआ।

1.3: अस्तित्व का प्रश्न: "मैं कौन हूँ?"

उस रूप को नहीं थी अपनी कोई पहचान,
था तो बस अपने अस्तित्व की
स्वयं में ही खोई एक अनुभूति,
और एक अनुत्तरित प्रश्न —
“मैं कौन हूँ?”

खंड 2: अनाहत नाद और आंतरिक आलोक

रामरहस्य @RamRahasya.com

कैवल्यः आत्मबोध और एकात्म की यात्रा
रचनाकार - प्रणव कुमार झा

2.1: प्रश्न से नाद तक का रूपांतरण

यह प्रश्न बार-बार उनके मानस में उठता रहा,
और उनके हृदय तक पहुँचकर,
एक लहर की तरह उन्हें भीतर तक झंकृत करता रहा।

क्षण बीते,
प्रहर बीते,
दिन बीते,
मास बीते,
वर्ष बीते,
युग बीत गए —

और वह लहर
उनके मानस से उठकर
उनके हृदय तक बार-बार पहुँचती रही,
मानो उनका अस्तित्व बन गई हो।

वह लहर तरंगों में बदली,
तरंगें नाद में परिवर्तित हुईं,
नाद से ध्वनि का उदय हुआ,
और उस ध्वनि की निरंतर धारा
अनाहत नाद के रूप में साँसों से चलने लगी।

2.2: मौन ऊर्जा और प्रकाश-पुंज का आविर्भाव

यह अनाहत नाद
बाहरी रूप से लगभग मौन की अवस्था में था,
पर अंदर ही अंदर
उनके हृदय के अंतःपटल पर
ऊर्जा के स्रोत के रूप में उभर रहा था।

उनका हृदय
मानो एक प्रकाश-पुंज से भर रहा था,
एक परमानंद की अनुभूति हो रही थी।

राम रहस्य @RamRahasya.com

2.3: हृदय की जिज्ञासाएँ और मानस की सतर्कता

अब इस दिव्य साकार रूप के भीतर
नई जिज्ञासाएँ जागीं —
इस बार, ये प्रश्न उनके हृदय में उभरे,
और वहाँ से उठकर
उनके मानस में गूँजने लगे:

"यह प्रकाश-पुंज क्या है?"
"यह परम आनंद कैसा है?"
"कहीं यह मेरे प्रश्न का उत्तर तो नहीं?"

अब उनका मानस सतर्क हुआ —
उस ध्वनि की ओर,
उस ऊर्जा की ओर,
जो प्रकाश बनकर उन्हें भीतर तक आलोकित कर रही थी।

खंड 3: प्रभु से साक्षात्कार और 'मैं' का त्याग

3.1: आंतरिक ध्वनि का बोध

वे सोचने लगे —
यह कौन सी ध्वनि है,
जो बार-बार मेरे अंदर से निकल रही है!
यह क्यों इस तरह मेरे अंतर्मन को छू रही है!
यह मेरे भीतर की गहराइयों से ही तो उभर रही है!
पर यह कौन-सा भाव है,
जिसमें मैं रमा जा रहा हूँ?

3.2: प्रकाश में लीनता और शाश्वत प्रश्न

रामरहस्य @RamRahasya.com

इस प्रश्न के हृदय में आते ही,
वे उस प्रकाश-पुंज को स्पष्ट देख पाते हैं।
आँखें तो अब भी बंद हैं,
वे उन्हीं में रम जाते हैं,
परम आनंद के अतिरेक से भर जाते हैं,
और सहज ही पूछ बैठते हैं —
"मैं कौन हूँ?"

3.3: प्रभु का उत्तर: "मैं सब कुछ हूँ!"

जहाँ अबतक कुछ नहीं था
अब वहाँ आप हैं,
मेरे मन को आनंद से भरने वाले।
आप ही सब कुछ हैं —
यह तो मैं जान गया।
हे प्रभु, यह बता दीजिए —
मैं कौन हूँ?
प्रभु मुस्कुरा उठते हैं
हाँ हाँ! "मैं सब कुछ हूँ!"

3.4: शिव का आत्मबोध: जड़ से चेतन तक

पर आप नेत्र खोलिए
और देखिए मुझे।
मैं तो कुछ नहीं हूँ,
जो हैं — आप ही हैं।
आप ही सर्व हैं,
आप ही सर्वस्व हैं,
आप ही शिव हैं।
मैं सब कुछ हूँ
क्योंकि आपमें और मुझमें कोई भेद नहीं

रामरहस्य @RamRahasya.com

प्रभु के भाव को समझ
शिव मन ही मन भरमाए।
अब शिव मुस्कुराए —
"मैं तो जड़ था,
आप में रम कर
मैं चेतन हुआ।"

3.5: रम-भाव की पहचान

अब मैं समझ गया,
आप तो अभिराम हैं —
जड़-चेतन जिसमें है,
रम-भाव से रमा हुआ,
आप वह राम हैं।

खंड 4: शिव की परमानंदमय लीनता

4.1: राम में शिव का एकात्म भाव

आप निराकार हैं,
फिर भी मेरे भीतर
साकार होकर प्रकट हुए।
आप ही सब कुछ हैं,
आप ही मेरे प्रश्न का उत्तर हैं।
अब न मैं रहा,
न मेरा "मैं कौन हूँ?"
बस आप ही शेष हैं —
शिव रूप में, रम भाव में,
प्रेम में, प्रकाश में,
अनाहत नाद में।

4.2: नामरस और रूप-समुद्र में गोते

राम रहस्य @RamRahasya.com

कैवल्यः आत्मबोध और एकात्म की यात्रा
रचनाकार - प्रणव कुमार झा

आपके रूपसमुद्र में
मन डूबा जा रहा है।
अब कहाँ कुछ
अपने बस में है,
सब कुछ तो आपके
नाम के रस में है।
मुझे इस नामरस को
जी भर कर पीने दीजिए,
इस रूप के समुद्र में
गोते लगाते हुए जीने दीजिए।

4.3: प्रेमाश्रु और राम-नाम का ध्यान

इतना कहकर शिव,
परमानंद से भरने लगे,
हृदय रुद्ध हो गया,
नेत्रों से प्रेमाश्रु झरने लगे।
जिह्वा पर फिर राम-नाम आया,
साँसों में वही अनाहत नाद समाया।
शिव की आँखें मुँद गईं,
वे राम में फिर रम गए,
वे राम में ही रम गए।

खंड 5: राम की भक्ति और सृष्टि का संकल्प

5.1: कल्पों तक का विश्राम

फिर क्या था —
फिर क्षण बीते,
फिर प्रहर बीते,
फिर दिन बीते,
फिर मास बीते,

राम रहस्य @RamRahasya.com

फिर वर्ष बीते,
फिर युग बीते,
और इस बार तो
अनेक कल्प भी बीते...

5.2: प्रभु राम का भोले भक्त में लीन होना

प्रभु राम भी,
अपने इस भोले भक्त में,
भोलेपन की उस निष्कलुष धारा में —
ऐसे खोए हुए थे,
जैसे स्वयं अपनी सृष्टि बढ़ाने की
चाह को भी भूल गए हों।

एक मधुर स्वप्न में,
संपूर्ण चेतना जैसे विश्राम में हो —
जहाँ न समय है,
न संकल्प, न विकल्प,
बस शिव हैं...
और प्रभु राम की दृष्टि
उन्हीं पर एकटक —
बिलकुल वैसे ही
जैसे कोई आत्मा
अपने प्रतिबिंब को
आनंद में निहार रही हो।

5.3: नया कल्प और प्रकृति का संकेत

तभी नया कल्प आया,
प्रभु की ज्ञान शक्ति ने
क्रिया शक्ति को जगाया,
और इच्छा शक्ति को
संकेत पहुँचाया।

राम रहस्य @RamRahasya.com

कि प्रभु स्वयं ही,
किसी भी काल से परे हैं,
और उनके ये भोले भक्त,
अपने भोलेपन पर अड़े हैं।

अब इच्छा शक्ति को ही
कुछ न कुछ करना होगा,
सृष्टि को आगे बढ़ाने के
संकल्प को प्रभु के
हृदय में पुनः भरना होगा।

खंड 6: प्रकृति का इंगित और शिव का महत्व

6.1: प्रभु और प्रकृति का संवाद

यह इंगित पाते ही मानो,
प्रभु की प्रकृति मुस्कुराई,
और वह मुस्कान अनायास ही
प्रभु के अधरों पर भी आई।
अपनी प्रकृति को इंगित कर
प्रभु स्वयं से ही बोले —
"मेरे भक्त काल हैं,
और यही हैं महाकाल भी।
पर क्या इनका इतना सा
परिचय पूरा है?
इनके बिना तो सृष्टि का
परिचय ही अधूरा है।

6.2: शिव और सृष्टि का सम्बन्ध

रामरहस्य @RamRahasya.com

यही तो वे भाव हैं,
जो मेरे भाव को
सृष्टि के अंत तक बढ़ायेंगे।
यही तो वे हैं, जो
सृष्टि में उत्पन्न मेरे सभी भावों को
उसकी भवितव्यता से मिलायेंगे।
यही तो मेरा संकल्प है।
फिर स्वयं में रमते हुए
इनको कल्पों तक देखना
ही तो एकमात्र विकल्प है।

6.3: शिव की जागृति और के विस्तार का सम्बन्ध

पर अब इन्हें जागना होगा,
और मेरे भाव को लिए
आगे बढ़ना होगा।
प्रभु की प्रकृति पुनः मुस्कुराई,
और इस बार तो बोल ही पड़ी—
"अगर इन्हें आपके भाव को लिए
आगे बढ़ना होगा,
तो प्रभु, आपको भी
कुछ और करना होगा।"

रामरहस्य @RamRahasya.com

खंड 7: शिव में राम के नए रूप का उदय

7.1: देवी का आग्रह और प्रभु की प्रकृति

कैवल्यः आत्मबोध और एकात्म की यात्रा
रचनाकार - प्रणव कुमार झा

प्रभु बोले, हे देवी!
मैं और आप
अलग कहाँ हैं?
आप तो सदैव
वास करती हैं
मेरे हृदय में।
इस बार प्रभु की
प्रकृति दिख पड़ी —
आगत, अनागत,
भूत, अनाभूत,
भवितव्य, अभवितव्य —
सभी सृष्टियों का
संपूर्ण विलास लिए,
प्रभु के पार्श्व में खड़ी।

7.2: शिव के हृदय में राम का नया रूप गढ़ना

वे पुनः बोली—
"अगर इन्हें आपके भाव को लिए
आगे बढ़ना होगा,
तो हे प्रभु,
आपको भी इनके हृदय में
अपना एक नया रूप
गढ़ना होगा।"

रामरहस्य @RamRahasya.com

7.3: प्रभु का अंतर्ध्यान और शिव की व्याकुलता

यह प्रभु की प्रकृति,
उनकी क्रियाशक्ति,

इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति —
सभी की यही तो मूल हैं।
इनके बिना तो स्वयं
प्रभु भी स्थूल हैं।
देवी का भ्रुकुटि कटाक्ष पा,
प्रभु शिव के हृदय से
निकल अन्तर्ध्यान हो गए।
शिव के सभी अनुभव—
शूल सम और विषम वाण हो गए।
प्रभु को ढूँढ़ते हुए विकल हो
शिव अपने ध्यान से जगे।
प्रभु को ढूँढ़ते उनके
नेत्रों से अश्रु झरने लगे।

खंड 8: कैवल्य का परम सत्य

8.1: शिव-राम एकात्म का दर्शन

प्रकृति ने कहा — "हे प्रभु!
अब उस समय को लाना ही होगा,
शिव को उनके हृदय में जगाना ही होगा।"
प्रभु भव-भाव में आए,
प्रकृति की क्रियाशक्ति उनमें समाई।
शिव ने कहा — "हे राम!
आप मेरे हृदय में क्यों नहीं आते?"

राम रहस्य @RamRahasya.com

प्रभु ने कहा — "हे भोलेनाथ!
मुझमें और आपमें भेद कहाँ है?
आप अपने ही रूप में मुझे देख क्यों नहीं पाते?"

8.2: त्रिशूलधारी राम और शिवोमा रामचंद्र

शिव को एक अहसास सा हुआ,
आँख बंद करते ही
उनके हृदय में फिर राम आए।
लेकिन इस बार प्रभु ने
अपने त्रिशूलधारी, नागहार,
चंद्रचूड़ और त्रिनेत्रधारी रूप दिखाए।
उनके बगल में एक देवी भी खड़ी थी।
पर अब शिव को कुछ बताने की
ज़रूरत क्या पड़ी थी? पर फिर भी प्रभु बोले
"शिवोमा रामचंद्रः अस्मि"
आपसे भिन्न नहीं,
आपसे अलग नहीं।

8.3: सृष्टि में शिव और शिव में राम

इस सृष्टि में आपसे क्या अलग है महादेव?
हैं तो केवल आप,
और मैं सदा आप में ही आश्रय पाता हूँ।
इस अनंत ब्रह्मांड की सृष्टि
पूर्ण रूप से केवल आप हैं
और आपमें मैं हूँ सदैव।
सृष्टि में जो है सब शिव है
और हर एक शिव के अंदर राम है।

8.4: मोक्ष का गंतव्य: कैवल्य

केवल शिव, केवल राम

रामरहस्य @RamRahasya.com

यही कैवल्य की अवस्था है।
कैवल्य में हैं केवल राम,
पर राम सदा शिव के सान्निध्य में हैं।
यही कैवल्य है,
और इसी शोध में
भविष्य में होने वाले
हर जीव की यात्रा का गंतव्य है।
हर आत्मा को इस सृष्टि में
राम से विलग हो आना है
हर आत्मा को पुनः
राम में ही मिल जाना है
पर आत्मा स्वयं शिव है
और शिव में राम है
यही कैवल्य है, यही कैवल्य है
न राम से परे कोई संकल्प है
न शिव से परे कोई विकल्प है
यही कैवल्य है, यही कैवल्य है।

राम रहस्य @RamRahasya.com

कैवल्यः आत्मबोध और एकात्म की यात्रा
रचनाकार - प्रणव कुमार झा